

ISSN 2455-6033

# मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट की इण्डियन लैंग्वेजेज की पत्रिकाओं में क्र.सं. 62 पर सम्मिलित

वर्ष : 14 अंक : 4 ( पूर्णांक - 56 )

दिसम्बर 2020 - फरवरी 2021



मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की त्रैमासिक शोधपत्रिका

# मीरा का व्यक्तित्व और कृतित्व



# मीरा पदमाला



# मीरा सुधा सिन्धु



प्रधान सम्पादक :  
स्वामी आनन्द स्वरूप  
सम्पादक :

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - RAJHIN/2007/19628  
ISSN 2455-6033

# मीरासायन

(साहित्यिक-सांस्कृतिक त्रैमासिक शोध-पत्रिका)

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका (इण्डियन लेक्वेज, क्र.सं. 62)

वर्ष-14, अंक-04 (पूर्णांक-56)

विसम्बर, 2020-फरवरी, 2021

## सहयोग राशि

वार्षिक  
व्यक्तिगत : 300.00 रुपया  
संस्थागत : 400.00 रुपया  
आजीवन (इस वर्षीय)  
व्यक्तिगत : 3000.00 रुपया  
संस्थागत : 4000.00 रुपया  
सहयोग राशि मीरा स्मृति संस्थान,  
चित्तौड़गढ़ के पक्ष में नकद/ऑन  
लाइन/चैक/ बैंक ड्राफ्ट द्वारा  
भेजवाई जा सकती है।

संस्थापक सम्पादक  
कीर्तिशेष स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती

सम्पादक  
सत्यनारायण समदानी

## मीरायन के बैंक खाता का विवरण

1. खाता का नाम मीरा स्मृति संस्थान  
(MEERA SMRITI SANSTHAN)
2. खाता संख्या बचत खाता 51042428405
3. बैंक शाखा भारतीय स्टेट बैंक, क्लस्टर स्ट शाखा  
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
4. IFSC SBIN0031237

शन-तिथि  
फरवरी, 2021

Designed by: उमेश अजमेरा, श्रीजी डॉट कॉम, चित्तौड़गढ़-382007/9159

समस्त सम्पादकीय सहयोग अवैतनिक एवं मानद है। रचनाकारों द्वारा  
व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

पत्रिका (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती

प्रधान सम्पादक :  
स्वामी आनन्द स्वरूप  
सम्पादक :

## अनुक्रम

| क्र.सं. | आलेख/रचना                                                           | पृष्ठ |
|---------|---------------------------------------------------------------------|-------|
| 1.      | मीरा-पद                                                             | 05    |
| 1.      | सन्त मीराबाई                                                        |       |
|         | (1) गिरधर म्हारो प्यारो ..... (2) माई म्हाँ गोविन्द गुण गास्यां.... |       |
| 2.      | मीरा-प्रशस्ति                                                       | 06    |
| 2.      | प्रो. भगवानदास जैन, अहमदाबाद (गुजरात)                               |       |
|         | प्रेम-पारावर है मीरा                                                |       |
| 3.      | सम्पादकीय                                                           | 07-09 |
| 3.      | प्रो. सत्यनारायण समदानी, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)                     |       |
|         | हस्तलिखित ग्रन्थ सम्पदा का उद्धार : एक राष्ट्रीय आवश्यकता           |       |
| 4.      | मीरा-सन्दर्भपत्र                                                    |       |
| 4.      | श्री ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, जयपुर (राजस्थान)                       |       |
|         | मीरां का प्राचीनतम पद : एक टिप्पणी                                  | 10-13 |
| 5.      | प्रो. विनान्त एम. क्लेवर्ट, लुवेण (बेल्जियम)                        |       |
|         | The 'Earliest' Pad of Meera                                         | 14-25 |
| 6.      | श्री भंवरलाल प्रजापत, उदयपुर (राजस्थान)                             |       |
|         | मीरां के हरजसों में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक लोकदृष्टि              | 26-31 |
| 7.      | डॉ. महेश एस., कन्नूर (केरल)                                         |       |
|         | अक्का महादेवी और मीराबाई की                                         | 32-37 |
|         | प्रतिरोधी चेतना : एक विश्लेषण                                       |       |
| 8.      | सुश्री नवमी एम., कासरगोड (केरल)                                     |       |
|         | स्त्री विमर्श के संदर्भ में मीरा                                    | 38-41 |
| 5.      | सन्त-भक्त/भक्ति पक्ष                                                |       |
| 9.      | डॉ. सुनील कुमार, अमृतसर (पंजाब)                                     |       |
|         | सन्त गरीबदास का सामाजिक चिन्तन                                      | 42-47 |
| 10.     | सुश्री तजिन्दर कौर एवं डॉ. सुनील कुमार, अमृतसर (पंजाब)              |       |
|         | श्री गुरुनानकदेवजी के आध्यात्मिक सिद्धांत                           | 48-51 |
| 6.      | इतिहास पक्ष                                                         |       |
| 11.     | डॉ. कुलराज व्यास, सरदारशहर (राजस्थान)                               |       |
|         | महाराजा सूरजमल के व्यक्तित्व का ऐतिहासिक अध्ययन                     | 52-57 |

## अक्का महादेवी और मीराबाई की प्रतिरोधी चेतना : एक विश्लेषण

- डॉ. महेश एस

जकड़न से मुक्ति का हर संभव प्रयास प्रतिरोध है, चाहे वह किसी रूप में भी हो। इस दृष्टि से देखा जाए तो हर जीव-जन्तु सांसारिक जकड़न से मुक्ति की प्रतिरोधधर्मिता से लैस है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं “मानव का लक्ष्य हमेशा से ही स्वतंत्रता रही है। जीवन भर मनुष्य इसी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहते हैं। एक शिशु जन्म पाते ही बने बनाये नियमों के विरुद्ध संघर्ष शुरू करता है। उस शिशु की पहली आवाज भी एक रोना है - अपनी इच्छा के विरुद्ध फंसे बंधनों से प्रतिशोध। यह स्वतंत्रता की अभिलाषा परिपूर्ण रूप से स्वतंत्र परमपुरुष की संकल्पना को जन्म देती है। मानव में ईश्वर की यह संकल्पना मूल संघटक तत्व है।” भारत के इतिहास में भक्तिकाल एक ऐसा काल है जहाँ स्वतंत्रता की यह अभिलाषा सार्वजनीन बन गयी थी। सदियों से कर्मकाण्डी जकड़न में बंधी भारतीय जन चेतना भक्तिकाल में सहसा बंधनों को तोड़कर उन्मुक्त होती नजर आती है। भक्तिकाल के पूर्व सर्वमान्य पितृसत्ता के केन्द्रीभूत वर्चस्व के कारण कर्मकाण्डों और आचार संहिताओं में स्त्री की स्थिति चिन्तनीय थी। उसे घर की चारदिवारी के भीतर ही जकड़े रखना संस्कृति की रक्षा के लिए अनिवार्य सा था। भक्तिकाल में सबसे पहले इन जकड़नों से मुक्ति की आवाज सशक्त रूप से दक्षिण से उभरी और उसमें कर्णाटका के वचन साहित्य का अद्वितीय स्थान है। 12वीं शताब्दी में कर्णाटका से अक्का महादेवी ने अपने वचनों द्वारा पितृसत्ता की सांसारिक जकड़नों से मुक्ति की अलख जगायी थी, जो धीरे-धीरे पूरे भारत में फैल गयी। सांसारिक मोह माया की जकड़न से मुक्त होकर आध्यात्मिक पथ पर उन्मुक्त होकर विचरने का जो आत्मज्ञान भारतीय दर्शनों ने दिया था उसे लोकमानस में उतार कर अपनी साधना को ही लोक-क्रान्ति बनाने की पहल अक्कामहादेवी से शुरू होती है। फिर 16 वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मीराबाई के माध्यम से यह चेतना और अधिक पनपकर भारतीय आध्यात्मिक साधना की सबसे अनुपम मिसाल बन गयी।

उपनिषद् काल तक भारतीय संस्कृति ऊर्ध्वगामी रही थी। फिर ब्राह्मणों के आगमन के साथ वैदिक कर्म-काण्ड अप्रतिहत रूप से समाज में वर्चस्व पाता गया और संस्कृति का स्वरूप वर्चस्वशाली शक्तियों द्वारा निर्धारित होने लगा। भारतीय मनीषा ने उपनिषद् काल तक जिस ज्ञान के हिमालय को अर्जित किया था वह ब्राह्मणों की कर्मकाण्डीय आभा के सामने ओझल होता गया। भारतीय दर्शन ने जिस सांसारिक मोह-माया से समाज को मुक्त रखना चाहा था उसी मोहपाश में भारतीय कर्मकाण्डी समाज लगातार लिप्त होता गया। विभिन्न प्रतीकों एवं बिंबों द्वारा समाज का प्रभु वर्ग कर्मकाण्डों को लगातार जिलाये रखने में कामयाब हुआ। प्रतीकात्मक उत्पादनों को प्रभुवर्ग किस प्रकार अपने कब्जे में करके सांस्कृतिक वर्चस्ववाद को जन्म देता है उसका ब्यौरा पियरे बोर्दोओ का हवाला देते हुए बन्नीनारायण यूँ देते हैं- “किस प्रकार समाज का प्रभुवर्ग प्रतीकात्मक उत्पादन के सभी साधनों पर कब्जा कर लेना चाहता है तथा इनकी मदद में ऐसे प्रतीकात्मक संसार की रचना करता है, जो उसके हितपरक ज्ञान एवं विचारधारा का वहन करे, उसका प्रसार करे तथा उन्हें लोकप्रिय बनाये।” कहने का तात्पर्य यह है कि उपनिषद् ज्ञान के परे ब्राह्मणों का कर्मकाण्डीय ज्ञान प्रभुवर्ग के लिए वर्चस्व प्राप्ति का साधन बन गया। वर्णाश्रम धर्म के साथ स्त्री को भोग्या बनाकर उसे जकड़नों में बाँध कर रखने वाला ज्ञान सामाजिक जीवन का संदर्भ बिन्दु बन गया।

ज्ञान के इस सांस्कृतिक वर्चस्व के विरुद्ध जो प्रतिरोध होना था वह भक्तिकाल में आकर सशक्त रूप में उभरा। भक्तिकाल की इस प्रतिरोधी चेतना में नारी प्रतिरोध बिल्कुल अलग किस्म का था। भक्तिकाल